प्रौढ़ शिक्षा के प्रति प्रौढ़ प्रतिभागियों की अभिवृत्ति

*डॉ0 अच्युता नन्द शुक्ला**

प्रौढ़ शिक्षा कार्यकम निरक्षर और गरीबों को नया सार्थक जीवन देने का प्रयास है, उन्हें विकास की प्रकिया में सहगामी बनाकर उनके जीवन स्तर की गुणवत्ता को ऊँचा उठाने का निवेश है। केवल अनपढ़ ही नहीं बल्कि पढ़े लिखे लोग भी अधिकतर इस प्रकार के प्रश्न करते हैं कि प्रौढ़ों को साक्षर बनाने से क्या लाभ ? उनकी यह भी दलील होती है कि इससे तो अच्छा है कि हम प्राथमिक शिक्षा का ही विकास करें। बच्चे जब पढ़े–लिखे होंगे तो भविष्य में निरक्षर प्रौढ़ो की समस्या अपने आप ही समाप्त हो जायेगी। इस तरह के प्रश्न अधिकांशतः इसलिए भी उठाये जाते हैं कि उन्हें समस्याओं का ठीक–ठीक अनुमान नहीं होता। यहॉ यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि जिस गति से बच्चों की संख्या में वृद्धि हो रही है, उनके अनुपात में यदि उनकी शैक्षणिक सुविधाओं पर ध्यान दें तो न केवल इस प्रदेश और देश में बल्कि तीसरी दुनिया के अधिकांश देशों में ये सुविधाएँ केवल 30% बच्चों के लिए पर्याप्त हो सकेगी। ऐसी स्थिति में शेष 70% बच्चे निरक्षर प्रौढ़ो की संख्या में वृद्धि करेंगे जिस पर काबू पाना अत्यन्त ही कठिन होगा।

प्रौढ़ शिक्षा की वर्तमान स्थिति –

आज देश को स्वतंत्र हुए 63 वर्ष हो गये परन्तु ग्रामीण पुनरूत्थान का कार्य जिस गति से होना चाहिए था वह दिखलाई नही देता है। सन 1978 में प्रारम्भ किये गये प्रौढ़ शिक्षा कार्यकम का लक्ष्य 15 से 35 वय समूह के सभी निरक्षरों को साक्षर करने का था किन्तु निरक्षरता का प्रतिशत जिस गति से नीचे आ रहा है, यह एक चिन्ता जनक विषय है। अतः आवश्यक हो गया है कि वर्तमान प्रौढ़ शिक्षा कार्यकम को इस प्रकार प्रभावी बनाया जाय जिससे ग्रामीण पुनरूत्थान के साथ–साथ इस देश से निरक्षरता भी शीघ्र दूर हो सके। इसके लिए प्रभावी कार्यकम के माध्यम से निम्नलिखित सामाजिक परिवर्तन की शीघ्र अपेक्षा की जा सकती है:

ग्रामीण और शहरी वातावरण के बीच उत्पन्न असमानता को दूर करने के लिए सही जानकारी देना।

साक्षरता का विकास करके सामाजिक बुराइयों जैसे बालविवाह, दहेज, छुआछूत आदि का व्यावहारिक व तार्किक उत्तरों द्वारा खण्डन।

भारतवर्ष में प्रौढ़ शिक्षा के कार्यकम में प्रौढ़ शिक्षा के प्रति प्रौढ़ प्रतिभागियों की अभिवृत्ति का पता लगाकर यदि प्रयोग किया जाये तो प्रौढ़ शिक्षा कार्यकम अधिक गतिशील होगा तथा अधिक से अधिक लोगों को साक्षर बनाकर प्रौढ़ शिक्षा के लक्ष्य को पूरा किया जा सकता है। इसी

* प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग,म0 गा0 काशी विद्यापीठ, वाराणसी

दृष्टिकोण से शोधकर्ता ने प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम गतिशीलता लाने के लिए प्रस्तुत शोध का चयन किया है।

प्रभावी प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम की सफलता एवं असफलता के पहलुओं पर विचार–विमर्श करने के पश्चात निम्न तथ्य सामने आते है –

- क्षेत्र विशेष की आवश्यकता क्या है ?
- वहॉ के निवासियों की जीविका के अब तक क्या साधन रहे हैं और उस क्षेत्र की पृष्ठभूमि के आधार पर और कौन से साधन सुगमता से विकसित किए जा सकते हैं।
- वहॉ के निवासियों में साक्षरता एवं शिक्षा की स्थिति कैसी है?
- उस क्षेत्र के विभिन्न ग्रामों एवं अंचलों में यातायात के साधनों की कैसी स्थिति है तथा वह क्षेत्र मुख्य नगर केन्द्र से कितनी दूर है?
- प्रौढ़शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत उस क्षेत्र में क्या कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

इन बिन्दुओं की वास्तविक जानकारी होने के पश्चात ही यह निर्णय किया जा सकता है कि शीघ्र जनजागरण के लिए कौन–कौन तरीके अपनाये जा सकते हैं। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोध के लिए प्रस्तुत विषय चुना गया है।

अध्ययन का उद्देश्य –

प्रौढ़ शिक्षा के प्रति प्रतिभागियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना ।

अध्ययन विधि– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत अध्ययन को व्यापक एवं प्रतिनिधित्व स्वरुप देने के लिए एक विकास खण्ड सरकारी स्तर पर तथा दूसरा विश्वविद्यालय स्तर पर लिया गया इस प्रकार अध्ययन के लिए निम्नांकित दो विकास खण्डों का चयन किया गया–

1– चहनियां विकास खण्ड – सरकारी स्तर पर निर्दिष्ट

2– काशी विद्यापीठ विकास खण्ड – काशी हिन्दूविश्वविद्यालय द्वारा निर्दिष्ट

दोनों विकासखण्डों से सामान संख्या के प्रतिभागी (100) चयनित किये गए जो दोनो विकास खण्डों की प्रतिभागियों की सम्पूर्ण संख्या का लगभग 33 प्रतिशत था ।

न्यादर्श में लिए गये प्रतिभागियों की संख्या का विवरण तालिका–2 में निम्नवत् वर्णित है–

सारणी –2 प्रतिभागियों की संख्या का विवरण

विकास खण्ड	केन्द्र संख्या	न्यादर्श संख्या
चहनियां	20	100
काशीविद्यापीठ	20	100
योग	40	200

उपकरण:

प्रौढ़ शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापन के लिए प्रौढ शिक्षा अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। यह अभिवृत्ति मापनी लिकर्ट के आधार पर निर्मित की गयी है। इसमें 60 कथन है। प्रौढ़ के उत्तर 5 श्रेणियों में यथा–अधिक सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, बिल्कुल असहमत में प्राप्त किये गये। इस मापनी में फलाकन एक क्रम से 5, 4, 3, 2, 1पक्ष में तथा इसका व्युत्क्रम दिशा में है जैसे पूर्णतः सहमत के लिए फलांकन 5 होगा और पूर्णतः असहमत के लिए 1 होगा। निषेधात्मक कथन में फलांकन इसके व्युत्क्रम में होगा। इस प्रकार समस्त पदो के जोड़ उन व्यक्तियों के सम्पूर्ण परिणामों के द्योतक हैं।

इस मापनी की विश्वसनीयता एवं वैद्यता क्रमशः 0.67 तथा 0.81 है।

परिणाम एवं व्याख्या:

प्रत्येक विकास खण्ड के उत्तर दाताओं का अलग अलग मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा सी. आर. ज्ञात किया गया। प्राप्त परिणामों का विवरण सारणी संख्या 2 में वर्णित है।

सारणी 2 विकासखण्डों के प्रतिभागियों का प्रौढ़ शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक विवरण

क्र0स0	उत्तरदाता संख्या	मध्यमान	प्रामणिक विचलन	सी0 आर0
1	100 चहनियां विकास खण्ड	210.3	18.5	4.426*
2	100काशीविद्यापीठ विकास खण्ड	199.9	14.5	

* .01 विश्वास स्तर पर सार्थक

सारणी 2 का अवलोकन करने से यह ज्ञात होता है चहनियाँ विकास खण्ड एवं काशी विद्यापीठ विकास खण्ड के प्रतिभागियों में प्रौढ़ शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की दृष्टि से सार्थक अंतर है क्योंकि C.R. का मान 4.426 है जो .01 स्तर पर निर्धारित मान (2.58) से अधिक है। इन दोनों विकास खण्डों के प्रतिभागियों के मध्यमानों के अंतर को देखकर यह ज्ञात होता है कि चहनियों विकास खण्ड के प्रतिभागियों की अभिवृत्ति काशी विद्यापीठ खण्ड के प्रतिभागियों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है।

इससे यह पता चलता है कि यद्यपि वे निरक्षर हैं पर शिक्षा के प्रति उनमें अच्छे भाव हैं और यदि उन्हें उचित वातावरण दिया जाय तो आगे चलकर उनके अन्दर शिक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकती है पर वास्तविकता यह है कि यहाँ के बहुसंख्यक लोग निरक्षर हैं वे अधिक से अधिक आय के स्रोतों जैसे कृषि, उद्योग आदि में लगे हैं। इस कारण वे शिक्षा को बहुत अधिक महत्व नहीं देते हैं। वे सोचते हैं कि शिक्षा या साक्षरता की उपलब्धि में समय देने की अपेक्षा आय की वृद्धि में समय एवं शक्ति देना अधिक हितकर होगा लेकिन वे यह नहीं जानते कि शिक्षा द्वारा कार्य कुशलता में वृद्धि होती है और कुशल श्रमिक उत्पादन में वृद्धि कर सकता है तथा निरक्षर

की अपेक्षा साक्षर अधिक उपार्जन कर सकता है। अतः ग्रामीण प्रौढ़ों को साक्षरता की ओर प्रेरित करने के लिए यह अच्छा समाधान होगा कि उन्हें उन्हीं के व्यवसाय जैसे कृपि या अन्य व्यावसायिक क्षेत्र में शिक्षित किया जाय । कार्यात्मक साक्षरता उनके लिए जनप्रिय होगी क्योकि कार्यात्मक साक्षरता में साक्षरता और गरीबी उन्मूलन दोनों सम्मिलित है। प्रसिद्ध विद्वान डा0 रामचन्द्रन ने निरक्षरता गरीबी पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि ''मैं यह कह सकता हूँ कि हमारे इतिहास में गरीबी और निरक्षरता दो अभिशाप की तरह लगे हुए हैं। निरक्षरता जीवन केन्द्रित और गरीबी उन्मूलन, साक्षरता पर आधारित है।'' इन्होंने देखा कि निरक्षरता और गरीबी दोनों समानान्तर चल रही है। अतः निरक्षरता को समाप्त करके गरीबी पर नियत्रण प्राप्त करने हेतु भी प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों का सफल होना आवश्यक और इस सफलता के लिए प्रौढ़ शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति प्रेरणा कार्य कर सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मिश्रा, टी.पी. (1987). डाइमेन्शन्स ऑफ रूरल डेवलपमेण्ट एण्ड एजुकेशन प्रोग्राम शोध काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी,132
2. शुक्ला, ए.न. (1988). कोन्ट्रिब्यूशन ऑफ एजुकेशनल टकनॉलाजी इन एडल्ट एजुकेशन प्रोग्राम, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध सं0सं0 विश्वविद्यालय, वाराणसी